IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्थानीय स्वशासन में शिक्षा आधार स्तम्भ

संजय कुमार कनौजिया
शोधार्थी, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज0)
डॉ0 आलोक कुमार श्रीवास्तव
आचार्य – राजनीति विज्ञान (राज0 महाविद्यालय, अजमेर)
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

लेख सारः–

भारत की समृद्ध संस्कृति में शिक्षा एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ के रूप में है शिक्षा एक साधन के रूप में है जो जीवन के मार्ग में आने वाली विभिन्न समस्याओं, कमजोरियों को दूर करके स्वाबलम्बन प्रदान करती है शिक्षा स्वस्थ्य समाज का निर्माण करती है स्थानीय स्वशासन के क्षेत्र में भी शिक्षा विशेष एवं सार्थक योगदान है जिसके द्वारा समावेशी विकास का निर्माण होता है । शिक्षा न केवल बुनयादी आवश्यकताओं के प्रबन्ध, उपयोगिता हेतु सहयोग प्रदान करती है बल्कि आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध करती है जिससे की विकास एवं लोकल्याण के दर्शन पूर्ण किया जा सकें । स्थानीय स्वशासन के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं, नीतियों, कार्यक्रमों, आभियानो, प्रबन्ध आदि के सफल क्रियान्वयन, लोकतान्त्रिक मूल्यो की स्थापना, वित्तिय पारदर्शिता, सूचना एवं तकनीक का समुचित उपयोग आदि प्रायः सभी क्षेत्रो की सफलता का मार्ग शिक्षा के द्वारा ही संम्भव होता है, शिक्षा हमारी जीवन शैली की सुगमता, सरलता, सफलता, पूर्णता के रूप में आधार स्तंम्भ हैं ।

मुख्य शब्दः–

समृद्ध, स्वालम्बन, विकेन्द्रीकरण, क्रियान्वयन, मान्यताओं, दृष्टिकोण, नेतृत्वकर्ता, प्रौद्योगिको, सशक्तिकरण, संसाधन ।

प्रस्तावनाः–

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है जिसे विशेष एवं आदरणीय स्थान प्राप्त है यहाँ के रिति रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं, विचारों मूल्यों, अवधारणाओं, सिद्धान्तों आदि से सकारात्मक ईच्छा शक्ति एवं दृष्टिकोण सदैव दिखाई देता रहा है जो हमारी लोकतन्त्र के प्रति गहरी आस्था को झलकाता है स्थानीय स्वशासन का स्वरूप पंचायत के तौर पर प्राचीन समय से निरन्तर प्रवाहित है जो ऋग्वेद काल से ब्रिटीश काल में भी यह प्रवाह समय एवं नैतृत्वकर्ता एंव व्यवस्था अनुसार निरन्तर बना रहा ।

भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात गांधी जी के ग्राम स्वराज्य के दर्शन को महत्व देते हुये स्थानीय स्वशसन को सवैधानिक रूप दिया गया । ग्रामीण क्षेत्रो की विभिन्न स्थानीय समस्याओं के निराकरण एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना हेतु स्थानीय स्वशासन का संगठन अग्रसर हुआ लेकिन 1993 में स्थानीय स्वशासन में ऐतिहासिक बदलाव हुआ जब 73वें एवं 74वें

संविधान संशोधन को लागू किया गया जिसके अन्तर्गत लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के मार्ग को सशक्त करते हुये स्थानीय स्वशासन में त्री–स्तरीय ढ़ाचे को अपनाया गया जिसका मूल उद्देशय समावेशी विकास करना था ।

भारत की अधिकांश जनता गांवो में निवास करती है जो शिक्षा के मूल जीवन रत्न से अभी भी दूर है जिसके कारण लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण एवं समावेशी विकास की प्रक्रिया को मानक गति प्राप्त नहीं हुई है जो उसे प्राप्त होनी चाहिए । शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रो में नीतियों, कार्यक्रमो, योजनाओं, अभियानो, वित्तिय प्रबन्धन, रोजगार, तकनीक, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, संसाधनो के उपयोग एवं प्रबन्ध आदि कार्य क्षेत्रों को प्रभावित करती है शिक्षा को बढ़ावा देने से ग्रामीण क्षेत्रो सभी आवश्यक महत्वपूर्ण विकास तत्वों का उपयोग कर स्थानीय स्वशासन को और भी ज्यादा मजबूती प्रदान कर सकते हैं एवं लोकतन्त्र के वास्तविक मूल्यों की प्राप्ति कर सकते हैं ।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1– शिक्षा की महत्ता का अध्ययन करना ।
2– शिक्षा एवं स्थानीय स्वशासन के बीच पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन करना ।
3– शिक्षा का स्थानीय स्वशासन में योगदान का अध्ययन करना ।
4– शिक्षा का लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की स्थापना में सहयोग का अध्ययन करना ।

शिक्षाः–

संसार में शिक्षा के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष धातु से बना है जिसका अर्थ है ''सिखना'' जो अंग्रजी शब्द म्कनबंजपवद लैटिन भाषा के म्कनबंतम एवं म्कनबमतम से बना है, जिसका अर्थ है 'नेतृत्व देना' 'बाहर लाना'।

भारतीय मनीषियों ने ''सा विद्या या विमुक्तये'' कहकर शिक्षा को मुक्ति का साधन माना है । गाँधीजी ने भी शिक्षा संर्वागीण विकास (आत्मा, शरीर व मस्तिष्क के विकास) की प्रक्रिया माना है एवं शिक्षा बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हे पूर्ण विकसित करती है । शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति की आत्म शक्तियों का विकास, ज्ञान, कला, कौशल आदि में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया हाता है साथ ही शिक्षा व्यक्ति के जीवन के मार्ग में आने वाली व्यवहारिक समस्याओं को दूर करते हुये आत्मविश्वास का संचार भी करती हैं ।

शिक्षा का महत्वः–

1– व्यक्ति की बौद्धिक एक आत्मिक क्षमता का विकास करना ।
2– व्यक्ति की बुनयादी आवश्यकताओं की प्राप्ति हेतु ।
3– शासन व्यवस्था द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं, नीतियों, कार्यक्रमों, अभियानो के सफल क्रियान्वयन हेतु ।
4– स्थानीय क्षेत्रो में वित्तिय प्रबन्ध, लेन–देन, बजट उपयोगिता आदि में पारदर्शिता लाने हेतु ।
5– सूचना एवं प्रौद्योगिकी का समुचित उपयोग करने हेतु ।
6– संसाधनों की प्राप्ति एवं समुचित उपयोग हेतु ।
7– शिक्षा के द्वारा महिलाओं सम्बल एवं सशक्तिकरण की आवश्यकता हेतु

8– जीवन शैली की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि विभिन्न गतिविधियों के सफल क्रियान्वयन हेतु ।

9– शिक्षा के द्वारा में प्राचीन कुरितियों, असमानता, मान्यताओं को शिक्षा द्वारा स्वस्थ समाज की रचना हेतु ।

स्थानीय स्वशासन में शिक्षा का योगदानः–

भारत की समृद्ध संस्कृति में शिक्षा एक आधार स्तम्भ के रूप है जो प्राचीन समय से वर्तमान तक इसकी सार्थकता एवं वैभावता को अभिव्यक्त करती है । संसार सर्वाधिक एवं विशिष्ठ महत्व केवल मनुष्य को ही प्राप्त है वह अपनी बौद्धिक क्षमता तथा चिन्तन शक्ति से उचित–अनुचित पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य आदि विषयो पर गम्भीरता से सोचने, कार्य करने एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास शिक्षा के द्वारा ही संम्भव हैं ।

'शिक्षा सा विद्या विमुक्तिये' कहकर एक साधन के रूप में है जो जीवन में आने वाली विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक आदी सभी क्षेत्रो की कमजोरियों को दूर करके स्वावलम्बी बनाती है साथ ही समावेशी विकास के दर्शन को सशक्त करती हैं ।

शिक्षा के द्वारा मनुष्य की बौद्धिक एवं मानसिक दक्षता में वृद्धि होती है जिससे की वह सफल जीवनयापन करके उन्नति एवं समृद्धि के उद्देश्यों की प्राप्ती करता हैं ।

शिक्षा के द्वारा सभी विभिन्न क्षेत्रो को सफलता निपुणता, कुशलता प्राप्त होती है जो व्यक्ति के जीवन शैली को सहज, सरल एवं सुगम बनाती हैं ।

इन सभी क्षेत्रो में स्थानीय स्वशासन भी है यहाँ शिक्षा के द्वारा विभिन्न समस्याओं का निराकरण, योजनाओं, कार्यक्रमों, नीतियों, अभियानों, वित्तिय लेन–देन आदि में समाज को समावेशी विकास के पूर्णता प्राप्त होती हैं । स्थानीय स्वशासन में सथानीय समस्याओं का निराकरण, योजनाओं, कार्यक्रमों, नीतियों, अभियानों को जमीनी स्तर तक पहुँचाना, संसाधनों के उपयोग एवं प्रबन्ध, आय–व्यय में पारदर्शिता, सूचना एवं तकनीक का समुचित उपयोग कर बुनियादी आवश्यकताये की प्राप्ती, कृषि, दुग्ध, उत्पादन, सहकारी, समिति, वित्तिय, लघु उद्योग आदि में शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो इन सभी क्षेत्रो के उद्देश्यो की प्राप्ती कर मानवीय एवं आत्मीय सुख की प्राप्ती करता हैं ।

आज विश्व के बदलते परिदृश्य में स्थानीय स्वशासन को मजबूती प्रदान करने एवं लोकतान्त्रिक मूल्यो की प्राप्ती करने में शिक्षा का योगदान अति महत्वपूर्ण है जो स्थानीय स्वशासन को जवाब देही सशक्त, प्रभावशाली, जनकल्याणकारी, लोकतान्त्रिक आदि स्वरूप प्रदान करती हैं।

सन्दर्भः–

बाहादुर डॉ0 समर सिंह	:	समसामयिक भारत एवं शिक्षा (2015) राखी प्रकाशन आगरा
शर्मा गण्पतिराय	:	उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा
व्यास हरिश्चन्द्र		राज0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
सलुजा चन्द्रकरण	:	शिक्षा संस्कृत प्रमोशन फाउण्डेशन नई दिल्ली
अनिल	:	भारत में विकास की चुनौतियाँ (2012) महेन्द्र बुक कम्पनी, गुड़गांव

बाला डॉ0 सरोज : स्थानीय प्रशासन (1998)
राज0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
शर्मा डॉ0 हरीशचन्द : भारत में स्थानीय प्रशासन (2006)
कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
योजना : नई दिल्ली अक्टूबर, 2015
योजना : नई दिल्ली अक्टूबर, 2017

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation